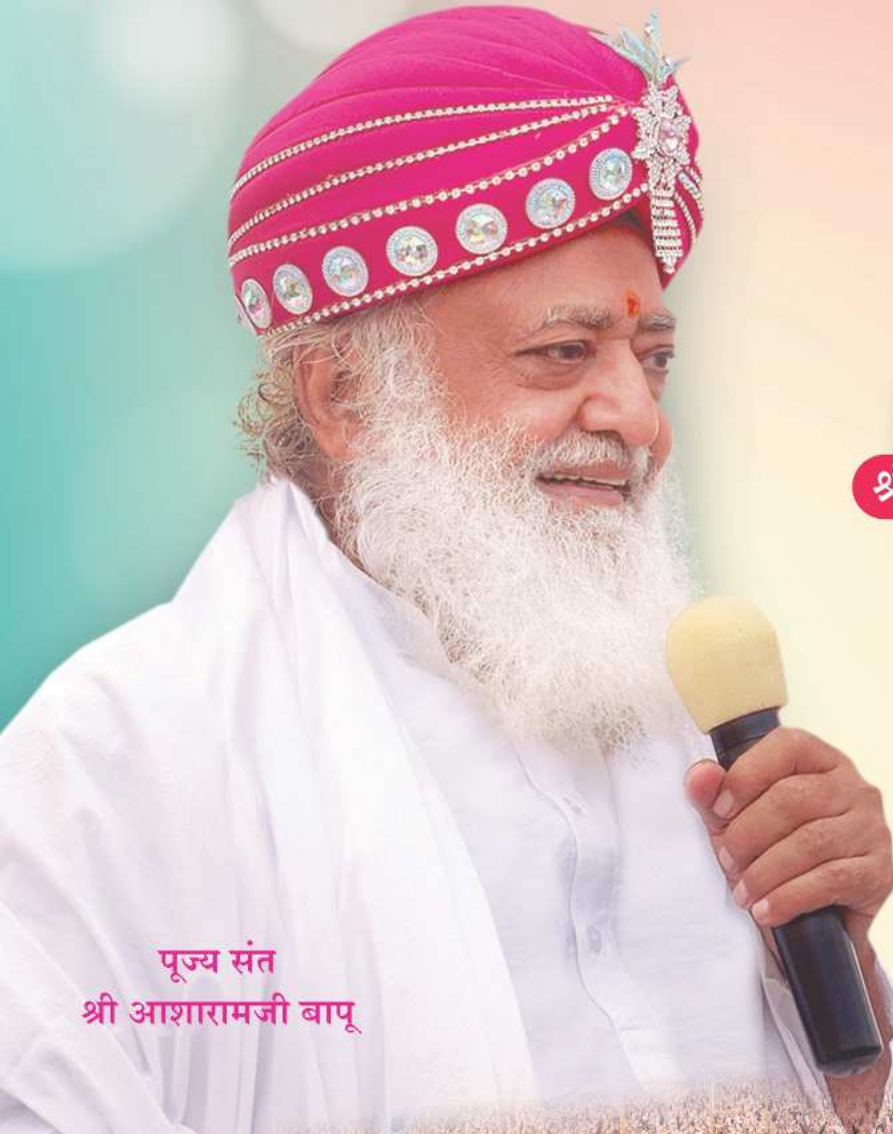


संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ नवम्बर २०१८
वर्ष : २८ अंक : ५
(निरंतर अंक : ३११)
पृष्ठ संख्या : ३६
(आवरण पृष्ठ सहित)



श्रीमद्भगवद्गीता जयंती : १९ दिसम्बर

भगवान श्रीकृष्ण के उपदेश से अर्जुन का विषाद भगवद्-योग में बदल गया और संग्राम जैसा कर्म भी उसके लिए कर्मयोग हो गया। आज के समस्याओं से भरे संघर्षमय जीवन के हर पड़ाव पर सफल होने की कला सिखाता है पूज्य बापूजी का सत्संग ! इसे पाकर विश्व के करोड़ों लोगों का जीवन स्वस्थ, सफल और आह्लादित हुआ है, धन्य-धन्य हुआ है और हो रहा है।

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू



पूज्य बापूजी के आत्मसाक्षात्कार दिवस पर उमड़े भवत



अन्य तस्वीरें आवरण पृष्ठ ४ पर

तुलसी पूजन दिवस
२५ दिसम्बर



सबसे बड़ा भगवान कौन ? २९ | शाकों में श्रेष्ठ बधुआ ३१

औषधीय गुणों से भरपूर व विविध रोगों में लाभदायी तोरई ३२



बुद्धि, कर्म व संगठन पूर्वक सजग तो रहना ही पड़ेगा

- पूज्य बापूजी

अभी एक व्यक्ति पर नहीं, पूरी भारतीय संस्कृति पर आक्रमण चल रहा है। यह घूमते-घूमते एक के बाद दूसरे व्यक्ति या संस्था पर जा रहा है। यह आँधी हमारी संस्कृति को मटियामेट करने के लिए चलायी जा रही है। इसमें तो सजग रहना ही पड़ेगा हर नागरिक को। जो भारत को अखंड देखना चाहते हैं, अपने बच्चों को उन्नत देखना चाहते हैं, माँ-बाप के आदर और सूझबूझ से माँ-बाप के प्रिय पुत्र और पुत्री बनना चाहते हैं अथवा जो अपनी परम्परा को सुंदर-सुहावनी देखना चाहते हैं, जो मानवमात्र का मंगल चाहते हैं, ऐसी मंगलमय संस्कृति की रक्षा करने का जिनके हृदय में सद्भाव है, उन सबको बुद्धिपूर्वक, कर्मपूर्वक, संगठनपूर्वक सजग तो रहना ही पड़ेगा।

ऐसा नहीं कि आप केवल आँखें मूँद के भगवान के सहारे बैठ जाओ... नहीं, भगवान को भी यथायोग्य करना होता है। देवी को भी यथायोग्य करना होता है। यथायोग्य उपाय, उपचार करना चाहिए।

‘भगवान जो करेंगे... जो भगवान की मर्जी...’ - यह पलायनवादी लोगों, मूर्ख लोगों का विचार है। आपके पुरुषार्थ से ही भगवान की मर्जी शक्ति देगी। आपका उतावला पुरुषार्थ है कि आध्यात्मिक पुरुषार्थ है कि आधिदैविक है, आधिभौतिक है वह आप जानो। लेकिन रोग आया, गरीबी आयी, नासमझी आयी या जो भी विघ्न-बाधा आये, यथायोग्य समय पर उसको मिटाने का पुरुषार्थ करना चाहिए; उतावले होकर, भयभीत हो के नहीं, सूझबूझ से करना चाहिए और सभीको मिल के करना चाहिए।

यह वास्तव मैं चिंता का भी विषय है

बापू को असर नहीं है, बापू निर्लेप हैं, चलो ठीक है लेकिन संस्कृति के लिए तो बापू को भी थोड़ा चिंतन करना ही पड़ता है। चिंतन चिंता न बने यह हम जानते हैं, बाकी यह वास्तव में चिंता का भी विषय है। इस आँधी को, भयंकर तूफान को साधारण न समझें। उसका उपाय उसके लिए संकल्प, जप, भगवद्-सत्ता की जागृति - यह सब होता है।

भगवान का नाम-स्मरण करो और ‘ये भारतीय संस्कृति पर आये हुए आँधी-तूफान मिटें और हमारी संस्कृति मजबूत रहे, हम दृढ़ रहें, संगठित रहें’ - ऐसा संकल्प करके बार-बार भगवान में, भगवद्-सत्ता में भेजो, फिर जो प्रेरणा मिलेगी उसके अनुसार दूर-दूर तक सद्भावों का, सद्विचारों का, सत्कर्मों का प्रसाद अपने-अपने ढंग से बाँटना पड़ेगा।

सफाई तो अपने को ही करनी पड़े न !

कीचड़ उछालनेवालों ने तो सब पर उछाल दिया, अब सफाई तो करनी पड़ेगी ! बाढ़ का पानी आया, सबके घरों में कीचड़ छोड़ के गया तो क्या वहीं पर पड़ा रहने देंगे ? ‘जो बाढ़ देवता की मर्जी !’ (शेष पृष्ठ १० पर)

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओडिया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २८ अंक : ५ मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३११
प्रकाशन दिनांक : १ नवम्बर २०१८
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
कार्तिक-मार्गशीर्ष वि.सं. २०७५

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम,
मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैनुफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों,
पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व
न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष,
मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैनुफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactures) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम,
संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पृष्ठछाछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२
Email : ashramindia@ashram.org
Website : www.ashram.org,
www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
वार्षिक	₹ ६५	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US \$ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US \$ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US \$ 80

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस अंक में...

- ❖ बुद्धि, कर्म व संगठन पूर्वक सजग तो रहना ही पड़ेगा २
- ❖ गुरु संदेश ४
 - * विश्वात्मा के साथ एकत्व करानेवाला अत्यंत उपयोगी साधन
- ❖ संत महिमा * महापुरुषों की लोक-मांगल्यकारी भावनाएँ ६
- ❖ प्रसंग माधुरी * उस पर कभी विवाद न करें ७
- ❖ गीता-अमृत * कर्म करने की कला ८, ११
 - * कैसा निराला है गीता का योग और उसके भक्त !
- ❖ शास्त्र प्रसंग * किन लोगों को शनि नहीं सताता ? १०, २३
 - * ...शुक-देह में स्थित ज्ञानवान की आत्मकथा
- ❖ पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग * गुरु-सान्निध्य के मधुर संस्मरण १३
- ❖ ऋषि ज्ञान प्रसाद * इससे बड़ा सौभाग्य क्या हो सकता है ! १६
- ❖ योग-वेदांत-सेवा * क्या है यज्ञार्थ कर्म ? १६
- ❖ विद्यार्थी संस्कार * ईश्वर के साथ एकाकार बुद्धि का चमत्कार ! १७
 - * सफलता की बुलंदियों तक... * नीर-क्षीर विवेक
 - * यूनिवर्सिटी में प्रथम आकर पाया स्वर्ण पदक - गोपेश्वरी राठौड़
 - * हँसते-खेलते भगायें अवगुण, भरें सदगुण
- ❖ काव्य गुंजन * मुझे तो अपनी तलब है... - ज.शं. नाविक १९
- ❖ तेजस्वी युवा * शक्ति का अपव्यय व संरक्षण कैसे ? २०
- ❖ महिला उत्थान * एक आदर्श नारी, जिनका सम्पूर्ण जीवन है... २१
- ❖ साँई श्री लीलाशाहजी की अमृतवाणी २२
- ❖ वैराग्य शतक * आत्मसंतोषरूपी धन ही सबसे ऊँचा है २४
- ❖ तत्त्व विचार * साँप मर गया, नेवला वहीं रह गया ! २५
- ❖ संतों की हितभरी अनुभव-वाणी * संत एकनाथजी २६
 - * संत सूरदासजी * संत दादू दयालजी * संत सुंदरदासजी
- ❖ आप कहते हैं * जो सत्य को जानते हैं, वे कहते हैं... - धर्मेन्द्र गुप्ता २७
- ❖ जीवन जीने की कला * मंत्रजप साधना २८
- ❖ सबसे बड़ा भगवान कौन ? २९
- ❖ भक्तों के भाव * सर्वमंगलकारी 'ऋषि प्रसाद' ३०
- ❖ शरीर स्वास्थ्य * शाकों में श्रेष्ठ बथुआ ३१
 - * औषधीय गुणों से भरपूर व विविध रोगों में लाभदायी तोरई
 - * खाएँ एक, पायें १० की शक्ति
- ❖ सुखमय जीवन की अनमोल कुंजियाँ ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग



रोज सुबह ७-०० बजे

रोज रात्रि १०-०० बजे

www.ashram.org/live

रोज सुबह ७ व रात्रि ९ बजे

- * 'साधना प्लस न्यूज' चैनल टाटा स्काई (चैनल नं. ५४०), डिश टीवी (चैनल नं. ६७९), रिलायंस डिजिटल टीवी (चैनल नं. ४३१), बिहार में मौर्या सिटी (चैनल नं. ३११), राँची में जीटीपीएल व डेन केबल पर तथा 'JioTV' एन्ड्रोइड एप पर उपलब्ध है।
- * 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। * 'प्रार्थना' चैनल जम्मू में TechOne Cable पर उपलब्ध है।

Download Rishi Prasad Official, Rishi Darshan & Mangalmay Official Apps

विश्वात्मा के साथ एकत्व करानेवाला अत्यंत उपयोगी साधन - पूज्य बापूजी

सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में हमारे शास्त्र कहते हैं कि जब भगवान नारायण के नाभिकमल से ब्रह्माजी का प्राकट्य हुआ तब ब्रह्माजी दिङ्मूढ़^१ की स्थिति में पड़ गये। वे समझ नहीं पा रहे थे कि 'मेरा प्रादुर्भाव (प्राकट्य) क्यों हुआ ? मुझे क्या करना है ?' तभी आकाशवाणी हुई: 'तप कर... तप कर...'

तत्पश्चात् ब्रह्माजी समाधि में स्थित हुए। उससे सामर्थ्य प्राप्त करके उन्होंने अपने संकल्प से इस सृष्टि की रचना की। अर्थात् हमारी सृष्टि की उत्पत्ति ही तप से हुई है। इसका मूल स्थान तप है।

वास्तविक कल्याण में सबसे बड़ी बाधा और उसका निर्मूलन

हमारे सत्शास्त्रों में अनेक प्रकार के तप बताये गये हैं। उनमें से एक महत्वपूर्ण तप है निष्काम कर्म, सेवा, परोपकार। इसी तप को भगवान ने गीता में 'कर्मयोग' कहा तथा ज्ञान, भक्ति और योग की भाँति इस साधना को भी भगवत्प्राप्ति, मोक्षप्राप्ति में समर्थ बताया।

व्यक्ति अपने तथा अपने परिवार के प्रति तो उदार रहता है परंतु दूसरों की उपेक्षा करता है। वह स्वयं को दूसरों से भिन्न मानता है। इसीका नाम अज्ञान, माया है। जन्म-मरण का, शोक-कष्ट का, उत्पीड़न व भ्रष्टाचार आदि पापों का यही मूल कारण है। भेदभाव और द्वेष ही मृत्यु है तथा अभेद भाव, अनेकता में एकता, सबमें एक को देखना,

सबकी उन्नति चाहना ही जीवन है।

समस्त बुराइयों का मूल है स्वार्थ और स्वार्थ अज्ञान से पैदा होता है। स्वार्थी मनुष्य जीवन की वास्तविक उन्नति एवं ईश्वरीय शांति से बहुत दूर होता है। न तो उसमें श्रेष्ठ समझ होती है और न ही उत्तम चरित्र। वह धन और प्रतिष्ठा पाने की ही योजनाएँ बनाया करता है।

मनुष्य के वास्तविक कल्याण में स्वार्थ बहुत बड़ी बाधा है। इस बाधा को निःस्वार्थ सेवा एवं सत्संग के द्वारा निर्मूल किया जाता है। स्वार्थ में यह दुर्गुण है कि वह मन को संकीर्ण तथा हृदय को संकुचित बना देता है। जब तक हृदय में 'मैं' और 'मेरे' की लघु ग्रंथि होती है तब तक सर्वव्यापक सत्ता की असीम सुख-शांति नहीं मिलती और हम अद्भुत, पवित्र प्रेरणा प्राप्त नहीं कर पाते। इन्हें पाने के लिए हृदय का व्यापक होना आवश्यक है। इसमें निःस्वार्थ सेवा एक अत्यंत उपयोगी साधन है।

परम लक्ष्यप्राप्ति हेतु पहली सीढ़ी

निष्काम कर्म जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करने की पहली सीढ़ी है। इसके अभ्यास से चित्त की शुद्धि होती है तथा भेदभाव मिटता है। सबमें ईश्वर की भावना दृढ़ होते ही 'अहं' की लघु ग्रंथि टूट जाती है और सर्वत्र व्याप्त ईश्वरीय सत्ता से जीव का एकत्व हो जाता है। भगवद्भाव से सबकी सेवा करना यह एक बहुत बड़ा तप है।

गुरु
संदेश

परमार्थ को साधने के
लिए, कलह, अशांति तथा
सामाजिक दोषों को निर्मूल
करने के लिए विश्वप्रेम को
विकसित करना होगा।

महापुरुषों की लोक-मांगल्यकारी भावनाएँ

लोभी धन का चिंतन करता है, मोही परिवार का, कामी कामिनी का, भक्त भगवान का चिंतन करता है लेकिन ज्ञानवान महापुरुष ऐसे परम पद को पाये हुए होते हैं कि वे परमात्मा का भी चिंतन नहीं करते क्योंकि परमात्मस्वरूप के ज्ञान से वे परमात्ममय हो जाते हैं। उनके लिए परमात्मा निजस्वरूप से भिन्न नहीं होता। हाँ, वे यदि चिंतन करते हैं तो इस बात का कि **सबका मंगल, सबका भला** कैसे हो।

एक बार गुरु नानकजी ने संत कबीरजी के पास परीक्षार्थ चार आने भेजे और कहलवाया कि "इससे कोई ऐसी वस्तु लें, जिसे खाकर सौ व्यक्ति तृप्त हो जायें।" कबीरजी ने उन पैसों की हींग मँगा ली और एक सेठ के यहाँ हुए भंडारे में दाल में उसका बघार लगवा दिया। वह दाल जिसने भी खायी उसने प्रशंसा की, सब तृप्त हुए। यह समाचार सुन नानकजी बहुत प्रसन्न हुए।

बाद में संत कबीरजी ने गुरु नानकजी के पास एक रुपया भेजकर कहलवाया कि "इस एक रुपये का ऐसा उपयोग कीजिये कि सभीको स्वास्थ्य-लाभ मिले।"

नानकजी ने विचार किया और कुछ हवनीय औषधियाँ मँगाकर भगवन्नाम के साथ हवन करने लगे। हवन के स्वास्थ्यप्रद धूँ से पूरा वातावरण पवित्र, सुगंधित हो गया, जिससे केवल मनुष्य ही नहीं बल्कि समस्त प्राणियों को लाभ मिला। यह बात सुनकर कबीरजी को अति प्रसन्नता हुई।

कैसे सुहृद होते हैं संत कि जिनका आपसी विनोद भी लोक-मांगल्यकारी एवं लोगों को सूझबूझ देनेवाला होता है।

**बापूजी की युवित,
हुई भयंकर महामारियों से मुवित**

वर्ष २००६ में सूरत में भीषण बाढ़ आयी थी, जिससे वहाँ कई गम्भीर बीमारियाँ फैल रही थीं। तब करुणासागर पूज्य बापूजी ने गूगल, देशी घी आदि हवनीय औषधियों के पैकेट बनवाये तथा अपने साधक-भक्तों को घर-घर जाकर धूप करने को कहा। साथ ही रोगाणुओं से रक्षा का मंत्र व भगवन्नाम-उच्चारण की विधि बतायी। विशाल साधक-समुदाय ने वैसा ही किया, जिससे सूरत में महामारियाँ व्यापक रूप नहीं ले पायीं।

वहाँ कार्यरत नेचुरोपैथी के चिकित्सकों ने जब यह देखा तो कहा कि "शहर को महामारियों से बचाना असम्भव था लेकिन संत आशारामजी बापू ने यह छोटा-सा परंतु बहुत ही कारगर उपाय दिया, जिससे शहरवासियों की भयंकर महामारियों से सहज में ही सुरक्षा हो गयी।"

पूज्य बापूजी अपने सत्संगों में वायुशुद्धि हेतु सुंदर युक्ति बताते हैं: "आप अपने घरों में देशी गाय के गोबर के कंडे पर अगर एक चम्मच मतलब ८-१० मि.ली. घी डालकर धूप करते हैं तो एक टन शक्तिशाली वायु बनती है। इससे मनुष्य तो क्या कीट-पतंग और पशु-पक्षियों को भी फायदा होता है। ऐसा शक्तिशाली भोजन दुनिया की किसी चीज से नहीं बनता। वायु जितनी बलवान होगी, उतना बुद्धि, मन, स्वास्थ्य बलवान होंगे।" (गौ-गोबर व विभिन्न

जड़ी-बूटियों से बनी 'गौ-चंदन' धूपबत्ती पर घी अथवा तिल के तेल की बूँदें (शेष पृष्ठ ९ पर)

कैसा निराला है गीता का योग और उसके भक्त !

- पूज्य बापूजी

(श्रीमद्भगवद्गीता जयंती : १९ दिसम्बर)

वेदोक्त रीति के अनुसार यज्ञशाला में बैठकर देवताओं के लिए जो होम-हवन किये जाते हैं, संकल्पपूर्वक दान किये जाते हैं उसमें धर्म की प्रधानता है। धर्म की भावना के बल पर यह सब सम्पन्न किया जाता है। मंदिर या एकांत स्थल में बैठ के की जानेवाली पूजा उपासना-प्रधान है। आसन, प्राणायाम एवं योग आदि साधना-विधियों में समाधि की प्रधानता है। वेदांत इन तीनों से विलक्षण है। इसमें तत्त्वदर्शन की प्रधानता है। 'आत्मा क्या है ?' इसका श्रवण करो, मनन करो, निदिध्यासन करो और अंततः उस तत्त्व का साक्षात्कार करो। यही वेदांत की रीति है।

गीता जिस धर्मोपासना, योग या ज्ञान का विवेचन करती है वह कुछ निराला ही है। वह यज्ञशाला, मंदिर, गिरि-गुफा या नदीतट पर पद्मासन लगाकर की जानेवाली साधना नहीं है। गीता में निर्दिष्ट साधना दैनंदिन लोक-व्यवहार में भी की जा सकती है। गीता में वर्णित धर्म-अनुष्ठान, कर्मयोग, ज्ञानयोग का अनुष्ठान व्रतमात्र नहीं है, होम-हवन ही नहीं है, गीता का योग तो ऐसा है जिसे दैनिक जीवन के क्रिया-कलापों के मध्य भी सिद्ध कर सकते हैं। भोजन पकाते हुए, रोजी-रोजगार चलाते हुए या कार्यालयों में कार्य करते हुए भी गीता का कर्मयोग आचरण में उतार सकते हो। अरे! भगवान तो यहाँ तक कहते हैं कि युद्ध करते हुए भी तुम गीता का योग सिद्ध कर सकते हो। युद्ध करने पर भी युद्ध से निर्लेप रह सकते हो। विश्व का कोई भी धर्म हमारे लोक-व्यवहार को अंतरंग, सूक्ष्म और भगवन्मय बनाने में इतना शक्तिमान नहीं है। गीता (६.३०) में तो भगवान ऐसा भी कहते

हैं कि

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति॥

'जो सम्पूर्ण भूतों (समस्त प्राणियों) में सबके आत्मरूप मुझ वासुदेव को ही व्यापक देखता है और सम्पूर्ण भूतों को मुझ वासुदेव के अंतर्गत देखता है, उसके लिए मैं अदृश्य नहीं होता और वह मेरे लिए अदृश्य नहीं होता।'

गीता का भक्त कैसा होता है इसका वर्णन भगवान ९वें अध्याय के १४वें श्लोक में करते हैं:

सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः।
नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते॥

'वे दृढ़ निश्चयवाले भक्तजन निरंतर मेरे नाम और गुणों का कीर्तन करते हुए तथा मेरी प्राप्ति के लिए यत्न करते हुए और मुझको बार-बार प्रणाम करते हुए सदा मेरे ध्यान में युक्त होकर अनन्य प्रेम से मेरी उपासना करते हैं।'

ऐसों को ईश्वर सँभाल लेता है

गीता का भक्त, भगवान का भक्त अकर्मण्य या पलायनवादी नहीं हो सकता। अर्जुन, उद्धवजी, अम्बरीष, लक्ष्मणजी, हनुमानजी, भरतजी आदि भगवान के अनन्य भक्त ही तो थे! भगवान के सिवाय और कहीं उनकी दृष्टि टिकती नहीं थी। फिर भी उनके व्यवहार में, उनके कार्यों में कहीं भी अकर्मण्यता, पलायनवाद, भीरुता को स्थान नहीं था। साधारण व्यक्ति न कर सके ऐसे महान कार्य उन कर्तव्यनिष्ठ भक्तों ने किये हैं। वे अपने कार्य में व्यस्त रहते हुए भी परमात्मनिष्ठा में अनन्य रहे। उनका कर्तव्य-बोध विशेष सुदृढ़ रहा। उनको प्राप्तव्य की कोई भी चिंता नहीं रही। भगवान का परम भक्त तो सेवाकार्य में प्रवृत्त हो और मृत्यु भी



विद्यार्थी संस्कार



ईश्वर के साथ एकाकार बुद्धि का चमत्कार !



- पूज्य बापूजी
फारस के बादशाह ने
अकबर को एक पिंजरे में बंद
एवं गुराते हुए देखता हुआ
शेर भेजा। बादशाह ने संदेश

भेजा कि 'इस शेर को पिंजरा खोले बिना नष्ट कर
दोगे तो हम तुमको अपना दोस्त बनायेंगे, नहीं तो
तुम्हारे राज्य पर धावा बोलेंगे।'

शेर मुँह फाड़कर खड़ा है। हकीकत में तो वह
नकली ही था। किसीने सोचा कि यह धातु का होगा
तो किसीने सोचा, किसी और चीज का होगा।

अकबर चिंतित था, 'पिंजरा खोले बिना यह
शेर खत्म करना है।' कई सलाहकारों से, वजीरों
से सलाह की कि "पिंजरा खोले बिना इस शेर को
मिट्टा देना है। क्या उपाय किया जाय ?" सब
निरुत्तर हो गये लेकिन जिसने सारस्वत्य मंत्र लिया
था, वह बुद्धिमान मंत्री था बीरबल। अकबर ने
उससे कहा: "बीरबल! तुम्हारी बुद्धिशक्ति गजब
की है! ईश्वर के साथ जुड़ गयी है। ऐसी कोई
समस्या नहीं जिसका समाधान तुम न कर सको।
फारस के बादशाह ने हमें पिंजरे में शेर भेजा है।
पिंजरा खोले बिना शेर को नष्ट करना है।"

सब देख रहे हैं। बीरबल ने सारस्वत्य मंत्र का
अनुसंधान (अर्थसहित चिंतन) किया। बोला:
"हाँ, हो जायेगा। यह तो दायें हाथ का खेल है!
तपी हुई शलाका ले आओ और शेर को स्पर्श
कराओ।"

लोगों ने समझा कि शेर किसी धातु का होगा
लेकिन था मोम का। तपी हुई शलाका से मोम
पिघलकर बह गया और पिंजरा खाली!

फारस के बादशाह ने कहा: "ऐसा बुद्धिमान
बीरबल जिस राजा का मंत्री हो, उस राजा पर
चढ़ाई करना समझदारी नहीं है।"

उस बादशाह द्वारा भेजे हुए शेर की पोल
खोलनेवाला बीरबल धन्य-धन्य हो गया।

बीरबल के जीवन में कैसा चमत्कार हुआ
सारस्वत्य मंत्र का! मंत्रजप से अंतरात्मा की बड़ी
शक्तियाँ पैदा होती हैं। □

सफलता की बुलंदियों तक...

- पूज्य बापूजी
प्यारे विद्यार्थियो! तुम जो बनना चाहते हो
उसके लिए आवश्यक सामर्थ्य तुम्हारे भीतर
ही विद्यमान है, पर वह सुषुप्त अवस्था में पड़ा
है। उसे जगाकर तुम सफलता की बुलंदियों
तक पहुँच सकते हो। इन्द्रिय-संयम,
एकाग्रता, पुरुषार्थ और दृढ़ संकल्प के द्वारा
उच्चतम योग्यता प्राप्त कर सकते हो।
तुम्हारे चित्त में परमात्मा की असीम शक्तियाँ
हैं। इनका सदुपयोग करना आ जाय तो बेड़ा
पार हो जाय।

प्रेरक पंक्तियाँ

जो चाहिए देखना, न देखा जिसने,
हर शै^१ पे किया है गौर क्या उसने।
'ये ऐसा-वो वैसा' में खपायी जिसने जिंदगी,
खुद क्या हैं इसीको न समझा उसने ॥

१. वस्तु

सर्वमंगलकारी 'ऋषि प्रसाद'

हमारे सत्शास्त्रों का ज्ञान तथा ऋषियों-मुनियों, संतों-महापुरुषों की अमृतवाणी ऐसी है कि जिसके पठन-श्रवण, चिंतन-मनन से बिन चाहे सब प्रकार का मंगल अपने-आप होने लगता है। 'ऋषि प्रसाद' के माध्यम से यही दिव्य प्रसाद जन-जन तक पहुँच रहा है। प्रस्तुत हैं इससे लाभान्वित लोगों एवं समाज तक इस ज्ञान को पहुँचानेवाले समाजसेवी पुण्यात्माओं के हृदयस्पर्शी जीवन-अनुभवः

इन्द्र कुमार मालवीय, भरुचः



पहले मैं दारु पीता था, कभी मांस भी खा लेता था। एक दिन एक साधक ने मुझे 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका दी। उसे पढ़ने के बाद मुझे अपने दुर्व्यसनों के प्रति बहुत ग्लानि हुई और रात को ढाई बजे मैंने दारु की बोतल उठाकर सारी दारु शौचालय में डाल दी और दुर्व्यसन-त्याग का दृढ़ संकल्प लिया। इस पत्रिका को पढ़ने से मेरा पूरा जीवन बदल गया।



वैशाली चौहान, देहरादूनः

कोर्ट के फैसले के बाद मैं सोचती थी कि 'बापूजी के लिए हम कुछ नहीं करते हैं। बस, ऊपर-ऊपर से बापूजी-बापूजी... बोलते हैं।' एक दिन मुझे बहुत ज्यादा बेचैनी हुई कि 'अब तो कुछ करना ही है!' घर में ऋषि प्रसाद के जितने भी पूर्व के अंक थे, मैंने उन्हें उठाया और बाँटने निकल गयी। मुझे पता नहीं होता था कि क्या बोलना है परंतु कोई बापूजी के संबंध में कुछ पूछता तो मैं गुरुकृपा से

उसको संतोषकारक उत्तर दे देती। जब ६०-७० पत्रिकाएँ बाँट गयीं तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि जैसे बापूजी मुझ पर बहुत खुश हैं। दो हफ्ते बाद ही मैं देहरादून के 'ऋषि प्रसाद अभियान समूह' से जुड़ गयी। तब से हम रोज सेवा करते हैं। मैं शाम को जॉब से सीधे सेवा के लिए जाती हूँ।

कविता रावत, देहरादूनः २००४ में हमारे घर ऋषि प्रसाद आयी तो मन में विचार आया कि 'पत्रिका इतनी अच्छी है तो जिन महापुरुष की कृपा से इसके द्वारा इतना ऊँचा



ज्ञान हम तक पहुँचा, वे कितने महान होंगे! उनका आश्रम कैसा होगा!' आश्रम जा के वहाँ का वातावरण देखा तो बहुत अच्छा लगा और मन में आध्यात्मिक मार्ग पर चलने व सेवा करने की लगन लग गयी।

मेरे छोटे भाई को ३ महीने की उम्र से बार-बार न्यूमोनिया हो जाता था। २००४ में ऋषि प्रसाद में न्यूमोनिया का उपचार दिया हुआ था। उसको करने से मेरे भाई को रोग में आराम होता गया। फिर उसे पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा दिलवा दी, उसके बाद कभी न्यूमोनिया नहीं हुआ।

बापूजी के जोधपुर केस का फैसला आने के समय देहरादून में हम ऋषि प्रसाद द्वारा सुप्रचार की सेवा कर रहे थे और अगले दिन फिर सेवा चालू कर दी थी। सेवा करते हुए ऐसा लग रहा था कि जैसे बापूजी साथ में हैं और अच्छे पढ़े-लिखे लोग भी सदस्य बन रहे थे। हम लोग अब भी नियमितरूप से सेवा के लिए निकलते हैं। बापूजी का सत्संग-अमृत घर-घर पहुँचाने की सेवा से बहुत आत्मिक आनंद व शांति मिलती है। □

*भक्तों
के भाव*

**सर्दियों में सेहत के लिए दिव्य
औषधियाँ व पौष्टिक गुणों से भरपूर पाक**

रजत मालती

शुद्ध रजत भस्म से युक्त रजत मालती गोलियाँ आयुष्य, बुद्धि, नेत्रज्योति, वीर्य और कांति वर्धक हैं। ये रक्त को बढ़ाती हैं, मांसपेशियों को ताकत देती हैं। मस्तिष्क, नेत्र, मूत्रपिंड एवं वातवहनाड़ियों के लिए बल्य हैं। रक्ताल्पता (anaemia), पक्षाघात (paralysis), ऐंठन, धातुक्षयजन्य दुर्बलता, नेत्ररोग, हिस्टीरिया, वार्धक्यजन्य रोग, नपुंसकता आदि में विशेष लाभदायी हैं। श्रम, पढ़ाई, रात्रि-जागरण, शोक, भय आदि से उत्पन्न तकलीफों में खास फायदेमंद हैं।



सौभाग्य शुंठी पाक

यह उत्तम बलवर्धक है। इसके सेवन से ८० प्रकार के वातरोग, ४० प्रकार के पित्तरोग, २० प्रकार के कफरोग, ८ प्रकार के ज्वर, १८ प्रकार के मूत्ररोग तथा नाक, कान, मुख, नेत्र व मस्तिष्क के रोग एवं वस्तिशूल, योनिशूल व अन्य अनेक रोग नष्ट हो जाते हैं।



अश्वगंधा पाक

यह पुष्टि व वीर्य वर्धक, स्नायु एवं मांसपेशियों को ताकत देनेवाला तथा कद व मांस बढ़ानेवाला है। नसों एवं धातु की कमजोरी, मानसिक तनाव, याददाश्त की कमी व अनिद्रा दूर करता है। दूध के साथ इसका सेवन करने से शरीर में लाल रक्तकणों व कांति की वृद्धि होती है, जठराग्नि प्रदीप्त होती है।



गर्मीशामक व यौवनप्रदाता रसायन आँवला रस

यह गर्मीशामक, वीर्यवर्धक व त्रिदोषशामक है। यह दीर्घायु तथा यौवन प्रदान करता है। कांति तथा नेत्रज्योति वर्धक व पाचनतंत्र को मजबूती देनेवाला है। इसके सेवन से स्फूर्ति, शीतलता व ताजगी आती है। हृदय व मस्तिष्क को शक्ति मिलती है। आँखों व पेशाब की जलन, अम्लपित्त (hyperacidity), श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, बवासीर आदि पित्तजन्य अनेक विकारों में लाभ होता है। हड्डियाँ, दाँत व बालों की जड़ें मजबूत बनती हैं एवं बाल काले होते हैं।



बाह्य रसायन

इसके सेवन से शरीर की दुर्बलता और दिमाग की कमजोरी दूर होकर आयु, बल, कांति तथा स्मरणशक्ति की वृद्धि होती है। खाँसी, दमा, टी.बी., कब्जियत आदि रोग दूर हो शरीर में स्थायी ताकत पैदा होती है। यह उत्तम रसायन होने के कारण जीवनीशक्ति से परिपूर्ण है।



१४ बहुमूल्य औषधियों के संयोग से बनी 'ओजस्वी चाय'

यह मेधाशक्ति, नेत्रज्योति व ओज वर्धक एवं जठराग्नि-प्रदीपक, हृदयपुष्टिकर, हृदयबलवर्धक, रक्तशुद्धिकर व अस्थि-पुष्टिकारक है। यह हृदय व यकृत उत्तेजक, कंठशुद्धिकर, पाचक व निद्राजनक है तथा दाह व त्रिदोष शामक, कृमिनाशक एवं नेत्रहितकर है। यह तनावमुक्त करनेवाली, मुख-दुर्गंधशामक एवं बहुमूत्रता में उपयोगी है।



उपरोक्त सामग्री आप अपने नजदीकी संत श्री आशारामजी आश्रम या समिति के सेवाकेन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं। अन्य उत्पादों व सभीके विस्तृत लाभ आदि की जानकारी के लिए एवं घर बैठे सामग्री प्राप्त करने हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगवाने हेतु सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७३०, ई-मेल : contact@ashramestore.com

देश-विदेश में मनाया गया पूज्य बापूजी का ५५वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2018-20
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2020)
Licence to Post Without Pre-payment.
WPP No. 08/18-20
(Issued by CPMG UK, valid upto 31-12-2020)
Posting at Dehradun G.P.O. between
1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st Nov 2018



जयपुर



हीरावाड़ी, जि. तापी (गुज.)



वापी (गुज.)



ब्राम्पटन
(कनाडा)



मथुरा



औरंगाबाद (महा.)



बाड़मैर
(राज.)



कुम्भार फलिया, जि. नवसारी (गुज.)



लख्मीगंज
जि. कालाहांडी
(ओड़िशा)



प्रतापगढ़ (उ.प्र.)



दिल्ली



अजमेर
(राज.)



कवर्धा
(छ.ग.)



नासिक

आश्रमों में हुए सामूहिक श्राद्ध-कार्यक्रमों में पितरों, शहीदों, समाजसेवकों व प्राणिमात्र हेतु किया गया श्राद्ध



अहमदाबाद



भैरवी (गुज.)



सूरत



उल्हासनगर (महा.)



करोलबाग-दिल्ली



नासिक



अहमदनगर (महा.)



छारिया, जि. पंचमहाल (गुज.)



वाराणसी फ्लाईओवर
हादसे में मृतक लोगों
के लिए पूज्य बापूजी
के निर्देशानुसार श्राद्ध

मकान हो या दुकान, या हो बाजार... जग रही है ज्ञान की अलख ! (ऋषि प्रसाद सदस्यता अभियान)



वाराणसी



नालगांव, जि. अहमदनगर



रामगढ़, जि. रोहतास (बिहार)



राजकोट (गुज.)

ओड़िशा के बाढ़-पीड़ितों में भोजन-प्रसाद वितरण



ऋषि प्रसाद सम्मेलन
सातनपुर, जि. समस्तीपुर (बिहार)



स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।